ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

स्तोतुर्मघवन् काममा दृण। ऋग्वेद 1/57/5
हे ऐश्वर्यशालिन् ! भक्त की कामनाओं को पूर्ण कर।
O the Bounteous Lord ! fulfil all the good wishes and desirer of your devotees.

वर्ष 38, अंक 11 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 19 जनवरी, 2015 से रविवार 25 जनवरी, 2015
विक्रमी सम्वत् 2071 सृष्टि सम्वत् 1960853115
दयानन्दाब्द : 191 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

66वें गणतन्त्र दिवस पर विशेष

आओ बनाएं, शहीदों के सपनों का भारत

आज हमारे भारतवर्ष को गणतन्त्र के सूत्र में बंधे हुए 65 वर्ष हो चुके हैं। इन वर्षों में हमने बहुत कुछ पाया और बहुत कुछ खोया है। गणतन्त्रता का अर्थ है – हमारा संविधान, हमारी सरकार, हमारे कर्त्तव्य और हमारा अधिकार।

भारत का प्रत्येक नागरिक जब गणतन्त्र दिवस का नाम सुनता है तो हर्ष से आप्लावित हो उठता है परन्तु जब वही नागरिक इस बात पर विचार करता है कि यह गणतन्त्रता तथा स्वतन्त्रता हमें कैसे मिली? तो उसकी आंखों से अश्रुधारा बह निकलती है और कहने लग जाता है–

दासता गुलामी की बयां जो करेंगे,
मुर्दे भी जीवित से होने लगेंगे।
सही हैं असह्य यातनायें वो हमने,
जो सुनकर कानों के पर्दे हिलेंगे।।

26 जनवरी जिसे गणतन्त्र दिवस के नाम से जाना जाता है। इस दिवस को साकार करने के लिए अनेक वीर शहीदों ने अपने प्राणों की बलि दी थी। गणतन्त्र के स्वप्न को साकार रूप में परिणित करने के लिए अनेकों सहस्रों युवा देशभक्तवीरों ने अपनी सब सुख-सुविधाएं छोड़कर स्वतन्त्रता के संग्राम में अपने आप को स्वाहा किया। बहुत से विद्यार्थियों ने अपनी शिक्षा-दीक्षा व विद्यालयों को छोड़ क्रान्ति के पथ का अनुसरण किया। बहनों ने अपने भाई खोये, पत्नियों को अपने सुहाग से हाथ धोने पड़े, माताओं से बेटे इतनी दूर चले गये कि मानो मां रोते-रोते पत्थर दिल बन गयी। पिता की आशाओं के तारे आसमान में समा गये। जिसे किसी कवि ने अपनी इन पंक्तियों में इस प्रकार व्यक्त किया है–

गीली मेंहदी उतरी होगी,
सिर को पकड़ के रोने में।
ताजा काजल उतरा होगा,
चुपके-चुपके रोने में।
जब बेटे की अर्थी होगी,
घर के सूने आंगन में।
शायद दूध उतर आयेगा,
बूढ़ी मां के दामन में।

सम्पूर्ण भारतवर्ष में हा-हाकार मचा हुआ था। अंग्रेज भारतीयों को खुले आम सर कलम कर रहे थे। चारों ओर खून-ही

– शेष पृष्ठ 6 पर

एक महान् बलिदानी की कर्मस्थली : पुण्यभूमि प्राचीन गुरुकुल कांगड़ी

इसी पुण्य भूमि से आरम्भ हुई थी भारत की नई शिक्षा क्रान्ति – महाशय धर्मपाल

इस वर्ष स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर गुरुकुल पुण्यभूमि (प्रथम स्थापित गुरुकुल कांगड़ी) हरिद्वार को दर्शन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। यहां यह भी बताना आवश्यक है कि यह स्थान (पुण्यभूमि) हरिद्वार से बहुत कम 4-5 किमी की दूरी पर है, किन्तु गंगा में आई बाढ़ के कारण यह एक टापू सा बन गया है। अत: यहां जाने का कोई सड़क मार्ग नहीं है। वहां जाने के लिए गंगा की बड़ी धारा को नाव या ट्यबू से पार करके अथवा हैलिकॉप्टर से ही जाया जा सकता है। महाशय धर्मपाल ने प्रथम भूमि पर हैलिकॉप्टर से उतरते ही उस स्थान को प्रणाम करते हुए कहा कि मैं आज इस भूमि का स्पर्श पाकर धन्य हो गया हूं। यह उस महात्मा की तपोभूमि है, जिसने संसार को एक नई शिक्षा ज्योति, एक नई शिक्षा क्रान्ति देने का महान कार्य किया है। आज हम उनको व उनके कार्यों के प्रति नतमस्तक होते हैं और इस भूमि से एक संकल्प लेकर जाना चाहते हैं कि हम इसके वर्तमान हालात से इसे निकालकर पुराने गौरव तक पहुंचाने के लिए अवश्य प्रयास करेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि इस भूमि को सुरक्षित रखना, इन भवनों की वर्तमान स्थिति को यथावत बनाए रखना अपने आप में एक बड़ी चुनौती है। परमात्मा हमें शक्ति दे कि हम उस चुनौती को स्वीकार कर सकें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने कहा कि वर्षों बाद यहां पर आना हुआ है, ऐसा लगता कि इस भूमि अथवा यहां के परिवेश में एक अलग आकर्षण है। हमें इस भूमि पर ही समाजोपयोगी शिक्षा सम्बन्धी विशेष कार्य आरम्भ करना चाहिए। अमर हुतात्मा राष्ट्रभक्त, महान क्रान्तिकारी, वेद एवं महर्षि

– शेष पृष्ठ 4-5 पर

गुरुकुल कांगड़ी पुण्य भूमि में यज्ञ करते आर्य विद्या सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल जी, श्री प्रेम अरोड़ा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य एवं श्रीमती वीणा आर्या, दिल्ली सभा के उप प्रधान श्री ओमप्रकाश आर्य, मन्त्री श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता एवं अन्य आर्यजन। इनसेट में कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक में लिए गए महत्वपूर्ण निर्णय

1. दिल्ली के विस्तार को देखते हुए हर वर्ष न्यूनतम एक नई आर्य समाज के गठन करने का लक्ष्य।
2. दिल्ली में नई आर्य समाज निर्माण में भूमि क्रय राशि का 25 प्रतिशत अथवा 10 लाख रुपये जो भी न्यून हो दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा समस्त आर्यसमाजों के सहयोग से प्रदान करेगी।
3. 'गुरु विरजानन्द संस्कृत कुलम्' की लोकप्रियता एवं सफलता को देखते हुए सभा ने निर्णय किया है कि कन्याओं हेतु भी दिल्ली में 'संस्कृत कुलम' का प्रकल्प खोला जाएगा ।
4. महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्म दिवस २०१५ को 'सत्यार्थ प्रकाश दिवस' के रूप में मनाया जाएगा।25000 सत्यार्थ प्रकाश मात्र 10/- में पुस्तक मेले के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने का लक्ष्य रखा।
5. सभी आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं में एक समान 'यज्ञ पद्धति' के लिए आवश्यक प्रकाशन एवं यज्ञ प्रशिक्षण शिविरों के आयोजन किए जाएंगे ।
6. 'घर-घर यज्ञ-हर घर यज्ञ' योजना का शुभारम्भ किया जाएगा। इसके अन्तर्गत नए परिवारों में नि:शुल्क यज्ञ (सामान सहित) करने की योजना है।
7. स्व. ब्र. राजसिंह आर्य जी की स्मृति में 51000/- रुपये के वार्षिक सम्मान की घोषणा । यह सम्मान उन विद्वानों को दिया जाएगा, जिन्होंने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए आर्य समाज का प्रचार-प्रसार करने का संकल्प लिया हो ।

– शेष पृष्ठ 6 पर

वेद-स्वाध्याय

देवों का मार्ग सुगम

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

न वाऽउऽएतन्म्रियसे न रिष्यसि देवाँ२ऽइदेषि पथिभिः सुगेभिः।
यत्रासते सुकृतो यत्र ते ययुस्तत्र त्वा देवः सविता दधातु॥

यजुः० २३।१६

अर्थ—हे विद्यार्थी! यदि तू **(सुगेभिः)** सुगमता से जाने योग्य **(पथिभिः)** मार्गों से **(देवान् इत् एषि)** दिव्य गुणों को धारण या विद्वानों को प्राप्त होवे तो **(एतत्)** शुभ आचरण, सद् व्यवहार के करने से तू **(न वै उ)** निश्चय पूर्वक न तो **(म्रियसे)** मरेगा ही और **(न रिष्यसि)** न ही दूसरों को अवनति के पथ पर ले जायेगा। तेरा यह शुभ आचरण उस मार्ग की ओर ले जायेगा जहाँ **(ते सुकृतः)** वे शुभ आचरण वाले देव **(यत्र आसते)** जिस उच्च स्थिति को प्राप्त होते हैं और **(यत्र ययुः)** जिस उत्तम गति मोक्ष को प्राप्त हुये हैं **(तत्र)** वहाँ तुझे भी **(देवः सवितः)** समस्त जगत् की उत्पत्ति करने वाला, सबका प्रकाशक सविता देव स्थापित करे।

इससे पहले मन्त्र में विद्यार्थी या ज्ञानप्राप्ति के इच्छुक मनुष्य को स्वावलम्बन का मार्ग ग्रहण करने को कहा है। कहीं यह मार्ग स्वेच्छाचारिता या उच्छृंखलता का प्रतीक न बन जाये इसलिये उसे किस मार्ग का अनुसरण किया जाये यह उपदेश दिया है।

१. सा विद्या या विमुक्तये जो मुक्ति की ओर ले जाये वही विद्या और शेष अविद्या जाननी चाहिये। हे विद्या अर्थात् मुक्ति पथ के पथिक! **देवान् इत् एषि पथिभिः** दिव्य गुणों की प्राप्ति और विद्वज्जनों की ओर जाने वाला पथ ही सुगम है। **सत्यमेव देवा अनृतं मनुष्याः** क्योंकि उनके जीवन में सत्याचरण है और सत्य सदा सरल होता है। एक झूठ को छिपाने के लिये कितने ही और झूठ बोलने पड़ते हैं। **तयोर्यत् सत्यं यतरद् ऋजीयः** (यजु०) असत्य का मार्ग छल-कपट और प्रपञ्चों वाला होता है। इसलिये तुझे सत्य मार्ग का ही ग्रहण करना चाहिये। यद्यपि इस पथ में भी बाधायें आयेंगी परन्तु सत्य स्वरूप परमेश्वर, सविता देव तेरा मार्गदर्शन और उत्साहवर्धन करता रहेगा, अतः हिम्मत नहीं हारना।

२. इस पथ से **सुकृतः ययुः** शुभ कर्मों को करने वाले जाते हैं जिनके जीवन में तप, श्रद्धा, संयम, सदाचार है। **महाजनो येन गतः स पन्था** जिस मार्ग से महापुरुष गये हैं, वही मार्ग प्रशस्त जानना चाहिये। ध्यान रहे, टेढ़े-मेढे, ऊँचे-नीचे, कण्टकाकीर्ण और सुनसान मार्ग की तस्कर, चोर, लुटेरे इच्छा करते हैं, सज्जन नहीं। देवता प्रवृत्ति के लोग तो इन पापपंक में धंसे हुओं को भी इस कीचड़ से निकाल उन्हें सत्पथ पर चलने की प्रेरणा करते हैं। उनके सदुपदेश से कितने ही पतितों का जीवन बदल गया है।

३. देवों का यह मार्ग सभी ओर से सुरक्षित है जिसका अनुगमन करने से **न म्रियसे न रिष्यसि** न तो तुम्हारा जीवन नष्ट-भ्रष्ट होगा और न ही तुम दूसरों के जीवन का नाश करोगे। मनुष्य का यह स्वभाव है कि जिस दुर्व्यसन का वह स्वयं शिकार है, उसमें दूसरों को भी फंसाने की चेष्टा करता है। मद्यपान करने वाला अपनी बोतल दूसरे को दे देता है कि तुम भी मेरे साथ पीओ। ऐसे ही चोर, तस्कर, जेबकतरे सभी अपनी संख्या-वृद्धि करने का प्रयत्न करते हैं। वे और भी अधिक पापी हैं जो दूसरों को भी पाप मार्ग में चलाने का षड्यन्त्र करते हैं।

४. देव पुरुष जिस मार्ग का अनुगमन करते हैं वह मार्ग विद्या और मोक्ष की ओर ले जाने वाला है, जिस पर चलने से **तत्र त्वा देवः सविता दधातु** वह सविता देव तेरा पथ-प्रदर्शक बन तुझे मोक्ष पद पर पहुँचायेगा जहाँ सर्वत्र आनन्द का साम्राज्य है। अब देर किस बात की। अपने कदम इधर बढ़ाओ। तुम्हें स्वयं यह ज्ञान होगा कि यह पथ कितना सुगम और सरल है।

गुरुकुल कांगड़ी में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह सम्पन्न

स्वामी श्रद्धानंद को वर्तमान गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली का जनक माना जाता है। उन्होंने ही आधुनिक युग में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की नींव रखी थी। देश में गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को मजबूत कर गौरवशाली भारतीय संस्कृति को पुनः जन मानस तक पुहंचाने के लिए देश में गुरुकुलों की श्रृंखला खोली जायेगी। यह विचार योग गुरु स्वामी रामदेव ने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद महाराज के बलिदान दिवस पर आयोजित श्रद्धांजलि सभा को संबोधित करते हुए विचार व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि यदि स्वामी श्रद्धानंद नहीं होते तो आपके बीच रामदेव भी नहीं होते रामकृष्ण से स्वामी रामदेव तक का सफर तय करने में स्वामी श्रद्धानंद व गुरुकुल का बड़ा योगदान रहा है।

उन्होंने कहा कि लार्ड मैकाले ने गौरवशाली भारतीय गुरुकुलीय शिक्षा परम्परा को खत्म करने का काम किया। गुरुकुलों पर प्रतिबंध लगाने के दृष्टिगत गुरुकुलों में दान देने वालों पर भारी कर लगाया। स्वामी रामदेव ने कहा कि स्वामी श्रद्धानंद व आर्य समाज के प्रति उनकी अपार श्रद्धा है। हम देश भर में शीघ्र ही गुरुकुल के साथ मिलकर काम कर देश में गुरुकुलों को खोलने की नई श्रृंखला शुरू करेंगे। इस दिशा में हम वर्तमान में भी कार्यरत है, अकेले हरिद्वार में ही नहीं बल्कि हम देश भर से नैष्ठिक ब्रह्मचारियों को लाकर स्वामी श्रद्धानंद के स्वप्नों के गुरुकुल को साकार करने की दिशा में लगभग दस हजार बच्चों के गुरुकुल को शीघ्र ही हरिद्वार में खोलेंगे। जहां उनसे बिना एक रुपया लिये उन्हें भारतीय दर्शन उपनिषदों में पारंगत कर तैयार करने का काम करेंगे।

उन्होंने कहा कि हमने देश के प्रधानमंत्री से बात कर देश में एक ऐसा आदर्श नया शिक्षा बोर्ड प्राप्त करने की दिशा में काम करने पर चर्चा की है। जिसकी भाषा तो भले ही अंग्रेजी हो परंतु वह गौरवशाली भारतीय प्राचीन शिक्षा पद्धति व संस्कारों का अथाह भण्डार होगा। इससे देश की शिक्षा प्रणाली में एक नई ऊर्जा का संचार होगा। प्रधानमंत्री ने इस पर अपनी सैद्धान्तिक सहमति प्रकट की है। यह शिक्षा बोर्ड मानव संसाधन मंत्रालय से मान्यता प्राप्त होगा।

स्वामी रामदेव ने कहा कि देश की आजादी में स्वामी श्रद्धानंद महाराज व आर्य समाज की अग्रणीय भूमिका रही है। मोहनदास कर्मचन्द गांधी को पहली बार महात्मा की उपाधि से स्वामी श्रद्धानंद महाराज ने ही संबोधित किया था। वर्तमान दौर में स्वामी दयानंद सरस्वती व स्वामी श्रद्धानंद महाराज के आदर्शो पर चल देश को एक नई दशा व दिशा देने की जिम्मेदारी हम सभी व आर्य समाज पर है। जिसे पूरा करने के लिए हम कृत संकल्पित हैं। प्राचीन भारतीय वैदिक ज्ञान, संस्कृति व हमारी गौरवशाली संस्कृति वर्तमान समय की आवश्यकता है जिससे हमें समाज को अवगत कराना है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ0 रामप्रकाश (पूर्व राज्य सभा सदस्य) ने कहा कि जिस महान व्यक्तित्व ने इस विश्वविद्यालय की स्थापना की थी उनका जीवन आसान नहीं था। कदम-कदम पर उन्हें परेशानियों का सामना करना पड़ा। लेकिन वह अपने निर्धारित लक्ष्य की तरफ बढ़ते गये। मतभेद हर व्यक्ति में हो सकते हैं परन्तु हमें हर व्यक्ति की योग्यता व उसके गुणों को पहचान कर आर्य समाज के सिद्धांतों को आगे बढ़ाने का काम करना चाहिए। हम आज जो कुछ भी हैं वह स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी श्रद्धानंद महाराज व आर्य समाज से ही हैं।

विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ सुरेन्द्र कुमार ने अपने संबोधन में कहा कि आज हम कुलपिता स्वामी श्रद्धानंद जी महाराज को स्मरणकर उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए एकत्रित हुए हैं। देश में जिस गौरवशाली शिक्षा पद्धति की नींव स्वामी दयानंद सरस्वती ने रखी थी उसे आगे बढाने का काम स्वामी श्रद्धानंद महाराज ने किया। स्वामी श्रद्धानंद को आज सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम उनके जीवन से प्रेरणा लें। उनके द्वारा दिखाये गये मार्ग पर चल उनके उद्देश्यों को समाज में आगे बढ़ाने में अपना जीवन लगा समाज का मार्गदर्शन करें। आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान आचार्य विजयपाल ने अपने संबोधन में कहा कि स्वामी श्रद्धानंद महाराज ने अपने जीवन में जिन विचारों को जाना व समझा उन्हें अपने जीवन में भी उतारा। इस संस्था व आर्य समाज का योगदान समाज निर्माण में व राष्ट्र निर्माण में महत्त्वपूर्ण रहा है। संस्था अपने गौरवशाली स्वर्णिम गौरव को पुनः प्राप्त कर राष्ट्र में संस्कार व युवाओं का निर्माण कर राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान जारी रखेगी। यह हम सभी का कर्त्तव्य है कि हम स्वामी दयानंद सरस्वती व स्वामी श्रद्धानंद के मूल्यों को अपने जीवन में उतार राष्ट्र निर्माण का काम करें। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान धर्मपाल आर्य ने अपने संबोधन में कहा कि हमें अपने आदर्शो स्वामी दयानंद सरस्वती व स्वामी श्रद्धानंद महाराज से प्रेरणा लें तथा जीवन में दूसरों को कहने के स्थान पर स्वयं पहल करने को महत्त्व देना चाहिए।

आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के महामंत्री विनय आर्य ने कहा कि आर्य समाज ने सदा ही राष्ट्र निर्माण व समाज निर्माण में अग्रणीय भूमिका का निर्वाह किया है। स्वामी दयानंद सरस्वती व स्वामी श्रद्धानंद महाराज द्वारा स्थापित गौरवशाली भारतीय शिक्षाप्रणाली को जन-जन तक पहुचाने के लिए आर्य समाज वर्तमान दौर में अपनी अग्रणीय भूमिका का निर्वाह कर रहा है। इसका गौरवशाली उदाहरण स्वामी श्रद्धानंद महाराज द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय है।

ब्रह्मचारी राज सिंह पूर्व प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने कहा कि आज समाज में स्वामी श्रद्धानंद महाराज द्वारा स्थापित दलितोत्थान सभा को पुनः स्थापित कर समाज के दलित वर्ग के बीच जाकर उनके उत्थान के लिए काम करने पर विशेष जोर दिये जाने की आवश्यकता है। वैदिक धर्म सम्पूर्ण मानव जगत का है किसी विशेष वर्ग समूह का नहीं।

गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता आचार्य यशपाल आर्य ने कहा कि हमारे कर्त्तव्य व मन्तव्य में समानता होनी चाहिए। आज जितनी ताकत आर्य समाज में दिख रही है वह स्वामी श्रद्धानंद महाराज की देन है।

श्रद्धांजलि सभा शुरू होने से पहले आर्यसमाज कीर्ति नगर दिल्ली के आर्य वीर दल के ब्रह्मचारियों ने सर्वस्व त्यागी नाटिका प्रस्तुत की जिसके माध्यम से स्वामी श्रद्धानंद महाराज के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया।

इससे पूर्व विद्यालय विभाग में यज्ञ

- शेष पृष्ठ 5 पर

एक रिपोर्ट

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्त्वावधान में 88 वां बलिदान दिवस समारोह सम्पन्न

आर्य केंद्रीय सभा (दिल्ली-राज्य) नई दिल्ली के तत्त्वावधान में स्वामी श्रद्धानन्द शोभा यात्रा एवं विशाल सार्वजानिक सभा का आयोजन किया गया। प्रात: काल 8:00 बजे से 9:30 बजे तक आचार्य सहदेव शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ संपन्न हुआ जिसमें आर्य-केंद्रीय सभा दिल्ली, आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली तथा दिल्ली एवं आस-पास के क्षेत्रों से समस्त आर्य-समाज, आर्य वीर एवं वीरांगनाओं के दल, आर्य विद्यालयों एवं अन्य आर्य सामाजिक संगठनों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया।

प्रात: 10:00 बजे विशाल शोभा यात्रा का प्रारम्भ वेद मन्त्रोच्चारण एवं उच्च वैदिक जयघोष तथा बैंड बाजों के साथ शोभा यात्रा की अग्रणी पंक्ति में रथ पर विराजमान स्वामी धर्ममुनि जी महाराज के नेतृत्व तथा श्री राजीव आर्य महामंत्री, आर्य केद्रीय सभा एवं श्री धर्मपाल आर्य, प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा श्री विनय आर्य (महामन्त्री) जी के दिशा निर्देशन में हुआ। स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती शोभा यात्रा बलिदान भवन नया बाजार, लाहौरी गेट से चलकर, खारी बावली, चाँदनी चौक, टाउन हाल, नई सड़क तथा अजमेरी गेट से होती हुई, लगभग पांच किलोमीटर का सफर तय कर 01:00 बजे रामलीला मैदान में पहुँची, जिसमें दिल्ली के समस्त आर्य समाजों, आर्य वीरदल एवं वीरांगना दलों तथा आर्य विद्यालयों ने अपनी-अपनी सुन्दर झाँकियों का निर्माण कर उन्हें महर्षि एवं देश भक्तों के चित्रों, कलाकृतियों, वेदमन्त्रों से लिखित बैनरों, ओ३म् की पताकाओं से अच्छी प्रकार सजाया हुआ था। आर्यवीर एवं वीराँगना दल अपने गणवेश में सुसज्जित पंक्तिबद्ध जयघोष करते, ईश्वर-भक्ति, देश-भक्ति तथा ऋषिभक्ति से ओत्-प्रोत् मधुर भजन संगीत से पुरानी दिल्ली का वातावरण नूतन व भक्तिमय बन रहा था। आर्य वीर एवं वीरांगनाएँ, आसन-मल्खम, भाला एवं तलवार बाजी से युद्ध कौशल की झलक प्रतीत हो रही थी। पंक्तिबद्ध बस, टैम्पू-ट्रक आदि बैनरों से सजे दूर तक शोभायमान हो रहे थे।

इस शोभा यात्रा का चाँदनी चौक से गुजरते हुए दिल्ली के प्रथम निर्मित आर्य समाज दीवान हॉल ने सभी आर्य समाजों की झाँकियों, टोलियों का स्वागत किया और शोभा यात्रा आगे बढ़ती गई। आर्य नेताओं ने शोभा यात्रा की प्रासंगिकता पर अपने विचार प्रस्तुत किए जिससे सर्वश्री ब्र० राजसिंह आर्य पूर्व प्रधान (दि. आ.प्र.सभा) व डॉ० मेजर रविकान्त प्रमुख थे। सुन्दर सुसज्जित आर्य समाज की टोलियाँ जयघोष एवं भजन कीर्तन तथा बाल क्रीड़ाओं से युक्त झाँकियाँ सुशोभित एवं मनोहारी प्रतीत हो रही थीं। इस प्रकार यह शोभा यात्रा 1:00 बजे अपने गन्तव्य स्थान रामलीला मैदान पहुँची। वहाँ पर एक वृहद् सभा का आयोजन किया गया जिसमें आर्य समाज के वरिष्ठ अधिकारी एवं नेता उपस्थित रहे। आर्य केन्द्रीय सभा तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारीगण एवं अनेक गुरुकुलों एवं विश्वविद्यालय के आचार्य कुलपति एवं कुलाधिपति सभा में उपस्थित रहे।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में विशाल सभा का आयोजन किया गया। सभा अध्यक्ष महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.) मुख्य वक्ता- डा० राम प्रकाश जी, कुलाधिपति गुरुकुल काँगड़ी तथा मंच संचालन श्री राजीव आर्य महामन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा ने किया। सभा का प्रारम्भ ईशस्तुति भजनों के माध्यम से हुआ। भजनोपदेशक सन्दीपार्य एवं पं० रामनिवास शास्त्री ने स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती के बलिदान समय का मार्मिक चित्रण अपने भजन के माध्यम से किया। पं० रामनिवास जी ने आह्वान किया कि- वर्तमान सरकार ने पं० मदनमोहन मालवीय और पूर्व प्रधान मन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी को भारत रत्न प्रदान किया है और आगामी भारत रत्न 'स्वामी श्रद्धानन्द' के नाम आना चाहिए जिसके लिए हमें प्रयास करना होगा। मंच पर उपस्थित सभी विद्वद्गण एवं संन्यासी वृन्द का पुष्पमाला एवं शॉल ओढ़ाकर स्वागत किया गया। आर्य जगत् में प्रसिद्ध विद्वान् मनुस्मृति के भाष्यकार डा० सुरेन्द्र कुमार ने अपने उद्बोधन में कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ऐसे महामना व्यक्ति थे जिन्होंने आदि संस्कृति और सभ्यता के उत्थान के लिए सर्वमेध यज्ञ किया अर्थात् अपनी सम्पत्ति, अपनी सन्तति और अपने जीवन का समर्पण किया। उन्होंने कहा कि राष्ट्र को स्वतन्त्र कराने तथा शैक्षिक क्रान्ति करने में तीन महापुरूषों का प्रयास रहा जिसमें सर्वप्रथम- 1. महर्षि दयानन्द सरस्वती, 2. स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती एवं 3. पं० गुरुदत्त विद्यार्थी।

लार्ड मैकाले द्वारा प्रतिपादित शिक्षा पद्धति का स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल खोल कर करारा जवाब दिया। अर्थात् महर्षि दयानन्द की विचार धारा को क्रियान्वित करने का कार्य स्वामी श्रद्धानन्द व पं० गुरुदत्त जी ने किया।

गाँधी जी ने स्वामी जी के देशहित कार्यों के लिए उनके गुरुकुलीय जीवन का उल्लेख करते हुए अपने 'नवजीवन' पत्र के सम्पादकीय में लिखा था कि 'मेरा गुरुकुल से निकट का सम्बन्ध है क्योंकि जब मैं दक्षिण अफ्रीका में स्वतंत्रता के लिए कार्य कर रहा था तो उस समय गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने स्वयं भूखे रह कर उससे जो पैसा बना वह तथा गुरुकुल के अध्यापकों ने अपने वेतन से पैसे बचाकर मेरे पास दक्षिण अफ्रीका में भेजे थे।' इसलिए जब गाँधी जी भारत आए तो सर्व प्रथम गुरुकुल में पहुँचे, मिस्टर गाँधी बनकर आए थे और महात्मा बनकर निकले। तात्कालिक भारत सरकार एवं तथा कथित इतिहासकारों ने इस तथ्य को छिपाया। जबकि 1972-73 में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर भारत सरकार ने एक टिकट जारी किया था उस समय जो परिचय-पत्र सरकार रखती है उसमें स्पष्ट लिखा था कि जब मिस्टर गाँधी भारत आए तो सर्व प्रथम गुरुकुल कांगडी में आए तो महात्मा बनकर आए। संविधान समिति के अध्यक्ष डा० भीमराव अम्बेडकर ने कहा था कि स्वामी दलितों के सच्चे हमदर्द हैं। इस अवसर पर श्री महेन्द्रपाल आर्य ने स्वामी जी को साम्प्रदायिक एकता के प्रबल पक्षधर बताया जिन्होंने दिल्ली की जामा मस्जिद के मिम्बर से जनता को वेद का सन्देश दिया। उनके जीवन से दो महत्त्वपूर्ण कार्यो का सन्देश मिलता है जिसमे प्रथम गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली का प्रारम्भ, दूसरा शुद्धि-आन्दोलन, समारोह में मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित डा० रामप्रकाश जी कुलाधिपति गुरुकुल कांगड़ी वि.वि. हरिद्वार एवं पूर्व राज्य सभा सांसद ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने अपने अदम्य साहस एवं पुरुषार्थ से असम्भव कार्यो को संभव कर दिखाया। अमृतसर में जलियाँवाला बाग कांड के पश्चात् वहां पर कांग्रेस अधिवेशन कराने का यदि किसी ने साहस दिखाया तो वे थे निर्भीक संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जिन्होंने शुद्धि आन्दोलन चलाकर हजारों मल्कानों को शुद्ध कर वैदिक धर्म में पुन: प्रविष्ट कराया जिसे 'घर वापसी' के नाम से भी जाना जाता है। उन्होंने वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में हिन्दी भाषा को अपना माध्यम बनाया। गुरुकुलों की स्थापना कर प्राचीन वैदिक शिक्षा प्रणाली का शुभारम्भ कर एक कीर्तिमान स्थापित किया। उनके साहस की अनेक कथाएं इतिहास में अंकित हैं। एक बार विद्यार्थियों ने बताया कि आप के कार्यालय में शेर बैठा है। वह सिंह था तो स्वामी जी नरसिंह थे। स्वामी जी वहां पहुंचे और शेर की आँखों में आँखें डाल कर देखते रहे, तो वह शेर कार्यालय से निकल कर जंगल की ओर चला गया। एक बार गुरुकुल में एक विद्यार्थी बीमार पड़ गया ज्वर पीड़ा के कारण वमन (Vomiting) कर दिया जिसको स्वामी जी ने अपने हाथ से साफ कर दिया, जो मातृवत् पालना का उत्कृष्ट उदाहरण है। उन्होंने कहा कि कुछ मनुष्य ऐसे होते हैं, जो भीड़ में कन्धा मार कर अपना रास्ता बना लेते हैं। ऐसे थे स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जिन्होंने समय की रेत पर अपने पद चिह्नों को अंकित कर दुनिया को दिखला दिया कि जो आदर्श महर्षि दयानन्द ने प्रस्तुत किये वे सार्वभौमिक हैं। अपना तन-मन-धन गुरुकुल को समर्पित कर शिक्षा के नए द्वार खोले जिसके लिए राष्ट्र हमेशा उनका ऋणी रहेगा। उनके बलिदान दिवस पर हम सब यह प्रतिज्ञा करें कि हम ऋषि ग्रंथो का अध्ययन करेंगे और उनके कार्यों को पूरा करेंगे। आज उनको हम शत-शत नमन् करते हैं। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने अपने सन्देश में कहा कि हम स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर राष्ट्र, भाषा, धर्म, शिक्षा और संस्कृति की रक्षा हेतु तन-मन-धन से समर्पित हो कार्य करें और समाज को जाति आदि के मतभेदों से मुक्त कर नव श्रेष्ठ समाज का सृजन करें, जिससे हमारी आगे आने वाली पीढ़ी सुख एवं शांति से जीवन निर्वाह कर सके।

आर्य केंद्रीय सभा के उप प्रधान श्री सुरेन्द्र रैली ने आर्यजनों को सम्बोधित करते हुए कहा कि हम अपने बालकों को वैदिक शिक्षा, संस्कृति व धर्म से अवगत कराएँ जिससे भावी पीढ़ी सजग हो अपनी जिम्मेदारियों को समझें, आर्य समाज और उन्नति को प्राप्त हो। इस अवसर पर आर्य समाज के मूर्धन्य विद्वान् एवं कार्यकर्त्ताओं को आर्य समाज के क्षेत्र में विशिष्ट सेवा करने के लिए समारोह में मंच पर सम्मानित किया गया। जिनमें सर्व प्रथम पं० महेन्द्रपाल आर्य वैदिक प्रवक्ता दिल्ली को 'डा० मुमुक्षु राम प्रसाद बिस्मिल' पुरस्कार से सम्मानित किया। श्री ब्रिजेश गौतम जी को 'पं० ब्रह्मानन्द स्मृति पुरस्कार, श्रीमती ममता महतानी धर्मपत्नी

- शेष पृष्ठ 5 पर

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

ईश कृपा से बाल-बाल बचे दयानन्द सेवाश्रम संघ के कार्यकर्त्ता

दुर्घटना के पश्चात् भी की समाज सेवा : गरीब वृद्धों को बांटे कम्बल

4 जनवरी 2015 को स्कोर्पियों एन एल 01 सी- 7642 में सवार होकर सर्वश्री विष्णु भट्टाचार्य जी प्रेसीडेन्टम माइनारिटी विंग, एन.पी.एफ., अरविन्दम खण्डल कोषाध्यक्ष, आर्य समाज दीमापुर, आचार्य संतोष कुमार शास्त्री समन्वयक अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ पूर्वोत्तर क्षेत्र तथा पहाड़ में गाड़ी चलाने के अनुभवी दो गुरुकुल आमसेना में अध्ययन किए हुए जिलियाँग नागा चालकों के साथ लगभग 11 बजे रानी गाईदिन्लयू वैदिक गुरुकुलम आजाईलोंग पहुँचे । भोजन करने के बाद लगभग 12 बजे डॉ. रमाशंकर शिरोमणि प्रबन्धक, महाशय धर्मपाल एम.डी.एच दयानंद आर्य विद्या निकेतन, धनसिरी कार्बी आँनलाँग, असम को भी साथ में गाड़ी में बैठाकर गुवाहाटी आर्यसमाज द्वारा दिए हुए कम्बल बाँटने के लिए नीचे जा रहे थे तभी गाड़ी के ब्रेक फेल हो गए और गाड़ी न्यूटल हो गई। गाड़ी लगभग 80 किमी. की गति के साथ एक पेड़ से टकराई और रोड के नीचे खाई में कूद गई। तत्पश्चात् दूसरे पेड़ से टकराने के बाद पलटकर पिच्चा हो गई। सभी सावारियां जीवित थीं पर लहूलुहान हो गए थे।

ग्रामिणों की सहायता से सभी सज्जनों को गाड़ी से बाहर निकाला गया। वर्षा तेज हो चुकी थी । घायल सज्जन भीग गए थे। आग आदि का प्रबन्धन कर चिकित्सा दल को बुलाया गया पर तेज वर्षा के कारण वे दो घंटे विलम्ब से आश्रम में पहँचे। चिकित्सा के बाद जब दर्द आदि कम हुआ तो सभी गांव के कम्युनिटी हाल में पैदल गए और ग्रामीण वृद्धों को कम्बल बांटकर उनका आशीर्वाद ग्रहण किया।

-जोगेन्द्र खट्टर, प्रभारी

प्रथम पृष्ठ का शेष

एक महान् बलिदानी ....

दयानन्द के सच्चे अनुयायी, गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली के पुनरुद्धारक स्वामी श्रद्धानन्द की कर्मभूमि जिसको आज 'पुण्यभूमि' के नाम से जाना जाता है। यह वही तपस्थली है जहां पर स्वामी जी ने भारत में पुन: गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली का शुभारम्भ किया था। परन्तु तात्कालिक समय में गंगा में आए विनाशकारी प्राकृतिक आपदा (बाढ़) के कारण उन्हें पुरातन गुरुकुल को दूसरे स्थान पर विस्थापित करना पड़ा। जो वर्तमान परिवेश में विश्वविद्यालय गुरुकुल कांगड़ी, गुरुकुल महाविद्यालय, गुरुकुल फार्मेसी आदि अनेक प्रकल्पों के साथ विद्यमान है। इस पुण्य भूमि को ऐतिहासिक स्थल अर्थात् आर्यों का तीर्थ स्थल बनाने के प्रयास आरम्भ करने के उद्देश्य से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, तथा हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त तत्त्वावधान में पुण्यभूमि में यज्ञ एवं दर्शन हेतु संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, हरियाणा एवं उत्तराखण्ड सभा के अधिकारियों एवं आर्यजनों ने भाग लिया। सभी प्रतिनिधिगण गुरुकुल कांगड़ी पहुंचे और वहां से अगले दिन 22 दिसम्बर को प्रात:काल निजी वाहनों तथा ट्रेक्टर ट्रालियों आदि के द्वारा पुण्यभूमि पहुंचे। पुण्य भूमि पहुंचने का रास्ता बड़ा दुर्गम व कठिन था। गंगा नदी के पार जाने के लिए ट्यूब की व्यवस्था की गई थी। गुरुकुल के ब्रह्मचारी, महिलाएं, बच्चे, वृद्ध एवं युवक धैर्यपूर्वक पुण्यभूमि पहुंचे। पुण्यभूमि पहुंचने पर कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी ने महाशय धर्मपाल जी का माल्यार्पण करके स्वागत किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ डॉ. योगेश शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में आयोजित यज्ञ से हुआ। यजमान के रूप में महाशय धर्मपाल जी, दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, महामन्त्री श्री विनय आर्य एवं कुलपति डॉ. सुरेन्द्र कुमार, मख्याधिष्ठाता आचार्य यशपाल थे।

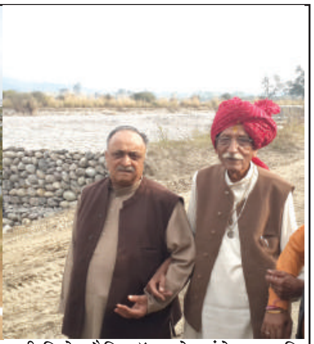

महाशय धर्मपाल जी एवं अन्य प्रमुख अधिकारी विशेष हैलिकॉप्टर से पहुंचे पुण्यभूमि

डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी ने पुण्यभूमि के इतिवृत्त पर प्रकाश डाला तथा दुर्लभ प्राचीन चित्रों एवं संस्मरणों द्वारा गुरुकुल स्थापना के उद्देश्य को सभी के समक्ष रखा। पुण्यभूमि पुनरोत्थान के लिए सभी गणमान्य महानुभावों ने अपने-अपने सुझाव दिए।

- शेष पृष्ट 5 पर

पुण्यभूमि पहुंचने के लिए जंगल में ट्रैक्टर और गंगा की धारा को ट्यूब से बने बेड़े पर बैठकर पार किया आर्यजनों ने।

पृष्ठ 2 का शेष

गुरुकुल कांगड़ी में स्वामी........

का आयोजन किया गया। ध्वजारोहण किया गया व विशाल शोभा यात्रा का शुभांरभ किया गया। जो नगर के मुख्य मार्गो से होते हुए दयानंद स्टेडियम में पहुंच विशाल श्रद्धांजलि सभा में परिवर्तित हो गयी। शोभा यात्रा में निकाली गई विभिन्न झांकियों में से प्रथम स्थान लेखराम छात्रावास की झांकी को, द्वितीय स्थान प्राचीन भारतीय संस्कृत एवं इतिहास विभाग (संग्रहालय विभाग) तृतीय स्थान अभियांत्रिकी एंव प्रौद्योगिकी संकाय को प्राप्त हुआ है तथा दो सांत्वना पुरस्कार कन्या गुरुकुल परिसर, हरिद्वार व प्रबंधन संकाय की झांकियों को दिए गये।

कार्यक्रम में सहायक मुख्याधिष्ठाता जयप्रकाश विद्यालंकार, राजेन्द्र विद्यालंकार, प्रो0 मुकेश रंजन वर्मा, सत्यवीर शास्त्री, उपकुलसचिव देवेन्द्र कुमार, पूर्व कुलसचिव ए0के0 चोपड़ा, पूर्व कुलसचिव, डॉ आर0डी0शर्मा, डॉ0 प्रभात सेंगर, डॉ0 ईश्वर भारद्वाज, डॉ सत्यदेव निगमालंकार, डॉ संगीता विद्यालंकार, शशिकांत शर्मा, डॉ शिवकुमार चौहान, प्रो0 पी0पी0 पाठक, डा0 प्रदीप जोशी, कुलभूषण शर्मा, प्रमोद कुमार, डॉ पंकज कौशिक, ब्रहमपाल सिंह चौहान, सत्यप्रसाद भट्ट सहित बड़ी संख्या में विश्वविद्यालय शिक्षक व शिक्षकोत्तर कर्मचारी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ अजय मलिक व योगेश शास्त्री ने संयुक्त रूप से किया। कार्यक्रम के अन्त में विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो0 वी0के0 शर्मा ने उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों का आभार व्यक्त किया।

– प्रदीप कुमार जोशी, पी.आर.ओ.

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में ध्वजारोहण करते महाशय धर्मपाल जी। श्रद्धांजलि सभा के अवसर पर मंच पर उपस्थित कुलाधिपति डॉ. रामप्रकाश, योग गुरु स्वामी रामदेव, आर्य विद्या सभा के प्रधान महाशय जी, दिल्ली सभा के प्रधान धर्मपाल आर्य, वरिष्ठ उप प्रधान, ब्र. राजसिंह आर्य, महामन्त्री श्री विनय आर्य, हरियाणा सभा के प्रधान आचार्य विजयपाल जी एवं अन्य महानुभाव।

स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान दिवस पर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालयों के विभिन्न विभागों द्वारा निकाली गई शोभायात्रा के दृश्य

पृष्ठ 3 का शेष

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली .....

अशोक महतानी जी को 'महात्मा प्रभु आश्रित' श्रीमती उषा किरण धर्मपत्नी श्री शिवकुमार अग्रवाल को 'वेद प्रकाश कथूरिया' स्मृति पुरस्कार से वैदिक धर्म शिक्षा-संस्कृति के प्रचार- प्रसार के लिए उल्लेखनीय कार्य हेतु शॉल एवं स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया। समाज सेवा में अनेक प्रकार से लोग संलग्न रहते है ऐसे विशिष्ट व्यक्तियों में डी.सी.पी दिल्ली पुलिस, श्रीमान् जगत सिंह टांग समाज सेवी, श्री सुरेश मारवाह जी, श्री योगेश मुंजाल जी, श्री श्यामलाल गर्ग (पूर्व विधायक) को शॉल ओढ़ाकर एवं स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया।

श्री विनय आर्य महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने समारोह को सम्बोधित करते हुए सन्देश दिया कि स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ने राष्ट्र उन्नति एवं एकता के लिए अनेक आन्दोलन चलाये जिनमें से एक 'शुद्धि-आन्दोलन' अर्थात् बिछड़े हुए भाइयों की घर-वापसी का रहा। दलितोद्धार अभियान के विषय में बताया कि स्वामी जी ने 1920 में नई दिल्ली के पहाड़गंज क्षेत्र में दलितों को आर्यत्व की दीक्षा देकर उन्हें उच्च समाज में जीने का मौका ही नहीं दिया अपितु इस क्षेत्र का बड़ा भू-भाग खरीदा और उसमें से 100-100 वर्ग गज के प्लाट दलितों को भेंट किये, जात-पात के भेद भाव को मिटाकर ऐक्य जीवन शैली में जीने का अधिकार दिया। स्वामी जी के इस उद्देश्य को आज हम ध्येय वाक्य के रूप में स्वीकार करते हैं कि- **"न कोई जाति न कोई भेद, सारे भारतवासी एक"**।

पृष्ठ 4 का शेष

एक महान् बलिदानी.......

पुण्य भूमि स्थित भवनों को देखकर सभी आश्चर्यचकित थे। 100 वर्ष पूर्व जो स्थिति थी उसी मजबूती से आज भी खड़े दिखाई दे रहे हैं। यदि आज इनमें कुछ कमी है अथवा वर्तमान स्थिति है वह हमारी लापरवाही के कारण है। 1400 बीघे का यह क्षेत्र आज सिमटकर एक छोटे से भूभाग तक सीमित रह गया है। इन सब समस्याओं पर गहरा दु:ख व्यक्त करते हुए महाशय धर्मपाल जी ने पुण्यभूमि के पुनरुत्थान के लिए सबको प्रेरित किया और अपना पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया। हम सबके सहयोग और पुरुषार्थ से ही इस विशाल सम्पदा को सुरक्षित एवं संरक्षित किया जा सकता है। मध्याह्न भोजन की व्यवस्था तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की ओर से की गई। सभी आगन्तुकों ने भोजन ग्रहण कर एक महान् संन्यासी के त्याग और तप को स्मरण कर, पुण्यभूमि की सुरक्षा एवं उन्नति का संकल्प लिया।

प्रथम पृष्ठ का शेष

आओ बनाएं, शहीदों के ....

–खून नजर आ रहा था। पर ऐसे विकराल काल में हमारे देशभक्तों ने जो कर दिखाया उसे देख अंग्रेजों की बोलती बन्द हो गयी।

जब देश में जलियाँवाला हत्या काण्ड हुआ तो उधम सिंह ने अपने आक्रोश से लन्दन में जाकर बदला लिया। साईमन के विरोध में लाला लाजपत राय ने अपने को आहूत करते हुए कहा था कि–

'मेरे शरीर पर पड़ी एक-एक लाठी ब्रिटिश सरकार के ताबूत की एक-एक कील का काम करेगी।'

एक वीर योध्दा ऐसा भी था जो देश से कोसों दूर अपनी मातृभूमि की चिन्ता में निमग्न था और होता भी क्यों न? क्योंकि–**'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।'**

अर्थात् जननी और जन्मभूमि दोनों ही स्वर्ग से भी महान होती हैं। इसीलिए वेद भी आदेश देता है कि– **'वयं तुभ्यं बलिहृतः स्यामः'** अर्थात् हे मातृ भूमि! हम तेरी रक्षा के लिए सदैव बलिवेदी पर समर्पित होने वाले हों। शायद इन्हीं भावों से विभोर होकर सुभाषचन्द्र बोस जी ने आजाद हिन्द फौज सेना का गठन किया और 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा' का नारा लगाकर अंग्रेजों की नाक में दम कर दिया।

वह दिन भला कोई कैसे भुला सकेगा? जिस दिन राजगुरु, सुखदेव व भगतसिंह को ब्रिटिश सरकार ने समय से पहले ही फांसी लगा दी।

अत्याचारियों के कोड़ों की असह्य पीडा को सहन करते हुए भी चन्द्रशेखर आजाद ने इंकलाब जिन्दाबाद का नारा लगाया। अरे! कौन भुला सकता है ऋषिवर देव दयानन्द को जिनकी प्रेरणा से स्वामी श्रद्धानन्द ने चांदनी चौक पर सीने को तानते हुए अंग्रेजों के कड़े शब्दों में कहा कि – दम है तो चलाओ गोली।

देशभक्तों को देशप्रेम से देदीप्यमान करने का काम देशभक्त साहित्यकारों तथा लेखकों ने किया। बंकिमचन्द्र चटर्जी ने 'वन्दे मातरम्' लिखकर तो आग में घी का काम किया। जो गीत देश पर शहीद होने वाले हर देशभक्त का ध्येय वाक्य बन गया। इस गीत को हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख सभी ने अपनाया । उन शहीदों के दिल के अरमान वस यही थे, जिनको कवि अपने शब्दों में गुन गुनाता है–

मुझे तोड़ लेना बन माली,
उस पथ पर देना फेंक।
मातृभमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ पर जाएँ वीर अनेक।।

मातृभूमि की रक्षार्थ शहीद होने वाले शहीदों की दासता कैसे भूलाई जा सकती है? शहीदों ने स्वतन्त्रता के लिए अहर्निश प्रयत्न किया। भूख–प्यास–सर्दी–गर्मी जैसी कठिन से कठिन यातनाओं को सहन किया। धन्य हैं वो वीरवर जिन्होंने हिन्दुस्तान का मस्तक कभी भी नीचे न झुकने दिया। स्वतन्त्रता के खातिर हँसते–हँसते फांसी के फन्दे को चूम लेते थे, आंखों को बन्द कर कोड़ों की मार को सह लेते थे, अपना सब कुछ भूलाकर बन्दूकों व तोपों के सामने आ जाते थे। मां की लोरी, पिता का स्नेह, बहन की राखी, पत्नी के आंसू और बच्चों की किलकारियां जिनको अपने पथ से विचलित नही कर पाती। उनका तो बस एक ही ध्येय हो ता था– **'कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्'**। देशभक्त जवान अंग्रेजों को ललकारते हुए कहा करते थे–

शहीदों के खून का असर देख लेना,
मिटा देगा जालिम का घर लेना।
झुका देगें गर्दन को खंजर के आगे,
खुशी से कटा देगें सर देख लेना।।

वीर शहीदों के अमूल्य रक्त से सिंचित होकर आजादी हमें प्राप्त हुई है। जिस स्वतन्त्र वातावरण में हम श्वांस ले रहे हैं वह हमारे वीर शहीदों की देन है। स्वतन्त्रता रूपी जिस वृक्ष के फलों का हम आस्वादन कर रहे हैं उसे उन वीर शहीदों ने अपने लहू से सींचा है। आजादी के बाद स्वतन्त्रता का जश्न मनाते हुए नेताओं ने वादा किया था कि–

'शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर वर्ष मेले। वतन पर मिटने वालों का यही निशां होगा।।'

परन्तु बहुत दुःख है कि शायद वर्तमान में हमारे नेता इस आजादी के मूल्य को भूल बैठे हैं। उनके विचार में आजादी शायद खिलौना मात्र है, जिसे जहां चाहा फेंक दिया। जब चाहा अपने पास रख लिया किन्तु ऐसा नहीं है। हमारे नेताओं ने देश को जिस स्थिति पर लाकर खड़ा कर दिया है, क्या यही है वीर शहीदों के स्वप्नों का भारत? क्या यही है मेरा भारत महान्? क्या यही दिन देखने के लिए वीरों ने अपनी बलि दी? आखिर क्यों हो रहा है? इस परिदृश्य को देखते हुए कि कवि ने ठीक ही कहा है –

शहीदों की चिताओं पर,
न मेले हैं न झमेले हैं।
हमारे नेताओं की कोठियों पर,
लगे नित्य नये मेले हैं।।

धन्य है इस देश के नेता, जो गरीब जनता की खून–पसीने की कमाई को निज स्वार्थता में अदा कर देते हैं। घोटाले कर अपने घर को भर लेते हैं। वन्दे मातरम् गीत को न गाने वाले उन नेताओं व मुस्लिम भाईयों से मैं पूछता हूं कि जो विचार आज ये नेता या मुस्लिम भाई रखते हैं। यह विचार बिस्मिल्ला खां ने भी तो सोचा होगा। उस समय की मुस्लिम लीग ने तो कोई चिन्ता नहीं की थी। वे तो देश की स्वतन्त्रता में संलग्न थे, पर शायद इन्हें देश की एकता सहन नहीं हो रही है। देशभक्त ऐसे विचार नहीं रखा करते हैं।

क्यों हम इतने दीन–हीन हो गए है कि किसी शत्रु के छद्म युद्ध का प्रत्युत्तर नहीं दे पा रहे है? क्यों 26 नवम्बर के मुम्बई हमले को हम इतनी आसानी से भूल जाते हैं? क्यों हम व्यर्थ में मन्दिर–मस्जिद के विवाद में फंस रहे हैं? क्यों हमारी न्यायिक प्रक्रिया में इतनी शिथिलता व अन्याय है कि आतंकवादी लोग आज भी मौज मस्ती से घूम रहे हैं? यहाँ धन से न्याय खरीदा जाने लगा है।

हे ईश्वर! यह कैसी राजनीति है? जिससे चक्कर में पड़कर हम अपनी भाषा, संस्कृति व देश की उन्नति को भूल बैठे है। क्यों हम इतने कठोर हृदयी हो गए कि गरीब जनता का हाल देख हमारा हृदय नहीं पिघलता है? क्यों हम पाप करने से नहीं रुक रहे? क्यों हम अपने देश की सीमाओं को सुरक्षित नहीं कर पा रहे हैं?

हमारे गणतन्त्र को खतरा है उन आतंकवादी गतिविधियों से, देशद्रोहियों से, सम्प्रदायवादियों से, धार्मिक संकीर्णता से, भ्रष्टाचार से एवं शान्त रहने वाली इस जनता से। हम भारतवासियों का यह कर्त्तव्य है कि देश की रक्षा एवं संविधान को मानने के लिए हम अपने आपको बलिदान कर देवें। हमें प्रत्येक परिस्थितयों में अपने देश की रक्षा करनी है। यह सत्य है कि विभिन्नता में एकता भारतीय संस्कृति की विशेषता है। खासकर मैं युवाओं से कहना चाहता हूं–

हे नवयुवाओं, देशभर की दृष्टि
तुम पर ही लगी,
है मनुज जीवन की ज्योति
तुम्ही से जगमगी।
दोगे न तुम तो कौन देगा
योग देशोद्धार में?
देखो कहां क्या हो रहा है
आज कल संसार में।।

आओ! हम सब मिलकर गणतन्त्र के यथार्थ स्वरूप को जानकर संविधान के ध्वजवाहक बनें और तभी जाकर हम सर उठाकर स्वयं को गणतन्त्र घोषित कर सकेंगे और कह सकेंगे कि – जय जनता जनार्दन। और अन्त में मैं वाणी को विराम देता हुआ यही कहना चाहूंगा–

ये किसका फसाना है
ये किसकी कहानी है,
सुनकर जिसे दुनिया की
हर आंख में पानी है।
दे मुझको मिटा जालिम
मत मेरी आजादी को मिटा,
ये आजादी उन अमर शहीदों
की अन्तिम निशानी है।।

– शिवदेव आर्य
गुरुकुल पौंधा, देहरादून

प्रथम पृष्ठ का शेष

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा .....

8. अखिल भारतीय स्तर पर विद्यालयी बच्चों की कॉमिक्स प्रतियोगिता कराई जाएगी जिसमें 5 लाख के पुरस्कार होंगे। यह प्रतियोगिता इसी वर्ष महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव से आरम्भ होगी।

9. आर्य समाज में बालकों एवं युवाओं की गति को बढ़ाने के विशिष्ट कार्यक्रमों के आयोजन किए जाएंगे। इस हेतु आर्यसमाजों में आर्यवीर दल, आर्य कुमार सभा एवं बाल कार्यक्रमों पर विशेष जोर दिया जाएगा।

10. 'साहित्य विक्रय से ही होगा आर्य समाज का प्रचार-प्रसार'। उद्देश्य की पूर्ति हेतु सभा ने प्रत्येक आर्य समाज में वैदिक साहित्य विक्रय केंद्र खोलने का लिया निर्णय।

उपरोक्त निर्णय 18 जनवरी, 2015 को आर्यसमाज हनुमान रोड में सम्पन्न हुई दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक में लिए गए। बैठक में आर्य समाज की उन्नति, प्रचार एवं प्रसार के विभिन्न मुद्दों के साथ-साथ समाज सुधार के पिछले कार्यों की समीक्षा एवं नवीन कार्य योजनाओं पर विस्तार से चर्चा हुई। वृहद् विचार-विमर्श के उपरान्त अन्तरंग सभा की बैठक में सर्वसम्मति से आर्य समाज की उन्नति में सहायक कार्यों के प्रस्ताव पारित किए गए। इनके आधार पर कार्य करते हुए सभा आर्य समाज के उत्थान एवं उन्नति कार्यों को एक नई ऊर्जा के साथ कार्यान्वित करके अपने उद्देश्य को मजबूती और पूर्णता प्राप्त कर सकेगी। *– महामन्त्री*

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा का

प्रान्तीय आर्य महासम्मेन

8 फरवरी, 2014

यज्ञ : प्रातः 8–9 बजे
ब्रह्मा : श्री सत्यवीर शास्त्री जी

पाखण्ड खण्डन सम्मेलन : 9–11 बजे
अध्यक्षता : आचार्य विजयपाल जी
मु. अतिथि : श्री धर्मपाल आर्य जी
मु. वक्ता : डॉ. सुरेन्द्र कुमार, डॉ. धर्मवीर, प्रो. ओमकुमार, एवं आचार्य सोमदेव जी
भजन : आचार्य रामनिवास आर्य जी

राष्ट्ररक्षा एवं भाषा सम्मेलन –11–1 बजे
अध्यक्षता : आचार्य बलदेव जी
मु. अतिथि : श्री रामविलास शर्मा
मु.वक्ता : श्री प्रकाश आर्य,
डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार,
श्री विनय आर्य
भजन : बहन अंजलि आर्या

गोरक्षा सम्मेलन – 1 से 3 बजे
अध्यक्षता : स्वामी रामदेव जी
मु. अतिथि : श्री ओमप्रकाश धनखड़ जी
मु. वक्ता : डॉ. देवव्रत आचार्य, आचार्य योगेन्द्र आर्य, आचार्य आजाद आर्य, एवं श्री कन्हैयालाल आर्य जी

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

– मा. रामपाल आर्य, मन्त्री

आर्यसमाज बिडला लाइन्स दिल्ली के
85वें स्थापना दिवस पर

आर्य भजन संध्या

शुक्रवार 30 जनवरी 2015
यज्ञ : सायं 6 से 7 बजे
ब्रह्मा : आचार्य कुंवर पाल शास्त्री
भजन संध्या : सायं 7 से 9 बजे
भजन : श्री अंकित शास्त्री एवं साथी
रात्रि भोज : रात्रि 9 बजे
आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनाएं।

- सुधीरचन्द घई, मंत्री

रतनचंद आर्य पब्लिक स्कूल
सरोजनी नगर नई दिल्ली का

वार्षिकोत्सव एवं धर्मवीर बाल हकीकत राय बलिदान दिवस

रविवार 1 फरवरी ,2015
स्थान: आर्यसमाज विनयनगर, वाई ब्लाक, सरोजनी नगर नई दिल्ली
यज्ञ - पात: 8:30 से 9:30 बजे
ब्रह्मा : श्री रामानंद आचार्य
बच्चों के कार्यक्रम : प्रात: 10 से 12बजे
श्रद्धांजलि सभा : 12:30 बजे
अध्यक्षता - महाशय धर्मपाल जी
मुख्य अतिथि - श्री धर्मपाल आर्य
वि.अतिथि - श्री राजीव आर्य,
श्री विनय आर्य
आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर वीर हकीकत राय को अपने श्रद्धासुमन अर्पित करें।

- पुरुषोत्तमलाल गुप्ता, महामंत्री

बलिदान दिवस पर यज्ञ

आर्य समाज खोडा अफगान सहारनपुर (उ0प्र0) में स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस समारोह के उपलक्ष्य में श्री अनुज कुमार शस्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री आदित्य प्रकाश गुप्ता ने 'वैदिक संस्कृति ज्ञान वर्धिनी प्रतियोगिता का आयोजन कराया, जिसमें प्रथम पुरुस्कार 2100/- अरुण कुमार तथा द्वितीय पुस्कार 1100/-राखी चौधरी को प्रदान किया गया।

- अमित कुमार आर्य, मंत्री

प्रवेश सूचना-2015-16
आर्य कन्या गुरुकुल
शास्त्री नगर, लुधियाना : 141002
दूरभाष: - 0161-2459563

छठी कक्षा (आयु +9 से -11 वर्ष) से कन्याओं के प्रवेश हेतु नियमावली एवं पंजीकरण पत्र (मूल्य केवल 100/- रुपए) भरकर 31-03-2015 तक गुरुकुल के कार्यालय में जमा करवाएं। (पंजीकरण पत्र डाक द्वारा भी प्राप्त किए जा सकते हैं।)
* कन्याओं की लिखित प्रवेश -परीक्षा 5 अप्रैल 2015 : प्रात: 8:00 बजे होगी। सफल कन्याओं का साक्षात्कार एवं स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा।

- सत्यानन्द जी मुंजाल
(कुलपति)

गुरुकुल हरिपुर (ओडिशा) का

वार्षिकोत्सव एवं चतुर्वेद पारायण यज्ञ

30, 31 जनवरी 01 फरवरी 2015
योग साधना शिविर : 5:30 से 6:30 बजे
द्वारा : स्वामी अमृतानन्द सरस्वती
यज्ञ : 7:00 से 8:30 बजे
ब्रह्मा : आचार्य राहुल देव शास्त्री
अध्यक्ष : श्री सत्यनारायण आर्य वानप्रस्थ
मु.अथिति : श्री खुशहालचन्द्र आर्य
वक्ता - श्री शिवदत्त पाण्डेय
भजनोपदेशक: श्री कैलाश कर्मठ
समापन समारोह : 1 फरवरी, 2015
आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनाएं।

-श्रुतिप्रिय शास्त्री, व्यवस्थापक

बलिदान दिवस समारोह सम्पन्न

आर्य समाज अरावली विहार के तत्त्वावधान में स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती जी का 88 वाँ बलिदान दिवस समारोह पूर्वक हर्षोल्लास से मनाया गया। पं0 शिवकुमार कौशिक व धमेन्द्र शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ हुआ। समारोह में सभा के अध्यक्ष पं. अमरमुनि (महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान), मुख्य अतिथि एडवोकेट जगदीश प्रसाद गुप्ता (प्रधान आर्य विद्यालय समिति) सभा में स्वामी जी को सरकार द्वारा भारत रत्न देने की मांग करते हुए एक ज्ञापन प्रस्तावित किया गया। *- धर्मवीर सिंह, मंत्री*

राष्ट्र समृद्धि यज्ञ एवं संगीतमय वेद कथा

महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति एवं आर्य समाज कोटा द्वारा संगीतमय वेद कथा का आयोजन किया गया। वेद कथा का शुभारंभ आचार्य अग्निमित्र के ब्रह्मत्व में राष्ट्र समृद्धि यज्ञ से हुआ। आचार्य जी ने वेद, ईश्वर, जीव, प्रकृति, यज्ञ व धर्म सम्बंधी वैदिक सिद्धांतों की सरलतम व्याख्या की। पं0 भूपेन्द्र सिंह आर्य एवं लेखराज शर्मा ने अपने सुमधुर भजनों से आर्य समाज, वेद एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती के सिद्धांतों एवं मन्तव्यों से उपस्थित श्रद्धालु श्रोताओं को अवगत कराया। *- अरविन्द पाण्डेय, प्रधान*

आध्यात्मिक दिव्य सत्संग

आर्य समाज राम नगर गुडगाँव (हरियाणा) में सप्तदिवसीय आध्यात्मिक दिव्य सत्संग का आयोजन किया गया। आचार्य गवेन्द्र शस्त्री जी दिल्ली के ब्रह्मत्व में प्रात: यज्ञ का शुभारम्भ हुआ जिसमें आचार्यजी ने सन्तान निर्माण के विषय में वैदिक दृष्टिकोण से अवगत कराया तथा महर्षि दयानन्दकृत संस्कार विधि के माध्यम से प्रत्येक गृहस्थ को संस्कार कर बालक को संस्कारवान बनाना चाहिए, तभी हमारी संस्कृति की सुरक्षा और संरक्षण होगा। इस अवसर पर आचार्य सतीश सत्यम् के सुमधुर भजनों ने सब को आहलादित किया। *-ओम प्रकाश चुटानी, प्रधान*

नि:शुल्क क्रियात्मक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर

सर्वकल्याण धर्मार्थ न्यास के तत्त्वावधान में पूज्य स्वामी बिलेश्वरानंद जी महाराज पुण्डरी के सहयोग व आशीर्वाद से पूज्य आचार्य राजेश्वर जी के निर्देशन एवं ब्रह्मत्व में 3 दिवसीय 'नि:शुल्क क्रियात्मक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर', पुण्डरी (कैथल) का आयोजन किया गया। जिसमें आचार्य जी ने यज्ञ के वास्तविक स्वरूप, लाभ, महत्व तथा रहस्यों की विवेचना की तथा मानव, परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विश्व के प्रति व्यक्तियों के कर्तव्य-पालन पर बल दिया। जिसमें 70-80 शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविर के संयोजक श्री राजपाल बहादुर जी रहे। श्री नन्दकिशोर शास्त्री के निर्देशन में गुरुकुल के 18 ब्रहमचारियों ने पूर्ण सहयोग दिया।

- कमलकान्त आर्य, संयोजक

आर्य अभिनन्दन

आर्य समाज के उपदेशक एवं भजनोपदेशक, जिनकी आयु 60 वर्ष अथवा उससे ज्यादा हो गयी है, हम उन सबका इसी वर्ष में अभिनंदन करेंगे। आप अपना फोटो, कार्यक्षेत्र, अन्य सूचना भेजें। एक पुस्तिका भी छापी जायेगी।

- ठाकुर विक्रम सिंह,
ए - 41 द्वितीय तल लाजपत नगर-2, निकट लाजपत नगर मेट्रो स्टेशन, नई दिल्ली -110024

वार्षिकोत्सव एवं निर्वाण दिवस

आर्यसमाज धनौंदा जिला महेन्द्रगढ़ हरियाणा के प्रांगण में त्रिदिवसीय वार्षिकोत्सव एवं महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस समारोह हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य वक्ता आचार्य आनन्द पुरुषार्थी ने वेद प्रादुर्भाव से आर्य समाज की स्थापना तक इतिहास का विशद् वर्णन किया। पं0 नरेशदत्त (बिजनौर) व पं0 बंशीलाल आर्य जी ने सुमधुर भजन प्रस्तुत किए। **- सन्त लाल आर्य, मंत्री**

शताब्दी समारोह सम्पन्न

आर्यसमाज भोजपुर खेड़ी का 100 वें वार्षिकोत्सव के रूप में पूर्ण गारिमा के साथ 28 नवम्बर को विशाल शोभा यात्रा ट्रैक्टरों मोटर साइकिलों के साथ निकटवर्ती आर्यसमाजों के साथ प्रात: 5 बजे से सायं 4 बजे तक 10 ग्रामों में भ्रमण कर वापस आई। निरन्तर तीन दिनों तक आर्य विद्वानों अनुज शास्त्री, प्रख्यात भजनोपदेशक सत्यपाल सरल प्रताप सिंह आर्य कु0 निकिता आर्या द्वारा वेदामृतपान कराया गया। 30 नवंबर को शतवर्षीय अनवरत यात्रा स्मारिका का विमोचन तथा 9 दिसंबर को महिला सम्मेलन नारी सशक्तिकरण, भ्रूण हत्या पर प्रभावी रोक लगाने की मांग की और समारोह शान्तिपाठ और धन्यवाद के साथ सम्पन्न हुआ ।

- मन्त्री

शोक समाचार

श्री ओम प्रकाश भाटिया का निधन

आर्य समाज पश्चिमपुरी के पूर्व प्रधान श्री ओमप्रकाश भाटिया जी का 30 दिसम्बर, 2014 को देहावसान हो गया, वे 76 वर्ष के थे। उनकी श्रद्धाञ्जलि सभा 2 जनवरी 2015 को सम्पन्न हुई। जिसमें दिल्ली की अनेक आर्य समाजों के प्रतिनिधियों एवं अन्य गणमान्य महानुभावों के साथ-साथ आर्य केन्द्रीय सभा के उपप्रधान श्री राजेन्द्र दुर्गा एवं रवि चड्डा प्रधान पश्चिम दिल्ली वेद प्रचार मण्डल ने भी भाटिया जी को अपनी विनम्र श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

श्रीमती पुष्पा देवी कपूर का निधन

आर्य समाज राजेन्द्र नगर की कर्मठ कार्यकर्ता माता श्रीमती पुष्पा देवी कपूर पत्नी श्री बालकृष्ण कपूर का 7 जनवरी 2015 को निधन हो गया। वे 88 वर्ष की थीं। वे अपने पीछे पुत्र श्री ज्ञानचंद्र कपूर का भरा-पूरा परिवार छोड़ गई हैं। उनकी स्मृति में शोक सभा 10 जनवरी को आर्य समाज राजेंद्र नगर में हुई।

श्रीमती गौरा देवी का निधन

आर्यसमाज सनवाड़, उदयपुर (राजस्थान) के प्रधान डॉ. एम. पी. सिंह की धर्मपत्नी श्रीमती गौरा देवी जी का 25 नवम्बर, 2014 को निधन हो गया। वे लगभग 47 वर्ष की थीं। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक विधि से किया गया। श्रद्धांजलि सभा 27 नवम्बर को सम्पन्न हुई जिसमें आर्य समाज सनवाड़ सहित कई सामाजिक संगठनों एवं नगरवासियों ने पहुंचकर श्रद्धाञ्जलि अर्पित की ।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 19 जनवरी से रविवार 25 जनवरी, 2015

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2015–2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 22/23 जनवरी, 2015

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015–2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 21 जनवरी, 2015

त्रिभाषा सूत्र पर संस्कृत शिक्षक संघ की संगोष्ठी सम्पन्न

नई दिल्ली, संस्कृत शिक्षक संघ दिल्ली द्वारा दिनांक 25 दिसम्बर को हिन्दी भवन में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें उपस्थित मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति श्री एस.एन.ढींगरा जी ने त्रिभाषा

सूत्र पर बोलते हुए संस्कृत भाषा के महत्व के बारे में बताया और कहा कि यह भाषा विश्व की अन्य भाषाओं से विशेष है,जैसी लिखी जाती है वैसी ही पढ़ी जाती है, शब्द निर्माण की अन्तहीन क्षमता है,व्याकरण के कारण इसकी संरचना सर्वोत्तम हैं। भाषा की दृष्टि से जो अर्थ गाम्भीर्य, लालित्य, गुण, रस, छन्द, अलंकार आदि साहित्यिक सौन्दर्य संस्कृत में हैं विश्व की किसी अन्य भाषा में नहीं। समारोह में उपस्थित अधिवक्ता मोनिका अरोड़ा ने पूर्ववर्ती सरकार द्वारा त्रिभाषा सूत्र तथा शिक्षा नीति की अवहेलना करते हुए जर्मन को थोपना गलत बताया। उन्होंने माननीय सर्वोच्च न्यायालय, उच्च न्यायालय दिल्ली तथा वर्तमान सरकार का धन्यवाद किया, जिन्होंने भारतीय भाषाओं तथा संस्कृत को उचित सम्मान दिया। उन्होंने मांग की कि केन्द्रीय विद्यालय संगठन के शासी निकाय (गवर्निंग बॉडी) को भंग कर तत्काल दोषी अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की जानी चाहिए। समारोह की अध्यक्षता कर रहे श्री अतुल भाई कोठारी, सचिव शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास ने अपने वक्तव्य में प्रकाश डालते हुए कहा कि 'भारतीय भाषाओं को उचित सम्मान देने तथा शिक्षा नीति को भारत के परिवेश के अनुकूल बनाया जाना चाहिए। माँ, मातृभूमि, मातृभाषा से बड़ा कोई नहीं है। समारोह का उद्घाटन करते हुए श्री धर्मपाल आर्य, प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने कहा कि संस्कृत समसामयिक संदर्भ में भी उपयोगी है। प्रो. ए.डी. माथुर, सेंट स्टीफन कॉलेज, ने कहा कि 'संस्कृत को दूसरे विषयों के साथ सम्बद्ध करके विषय के रूप में पढ़ाया जाना चाहिए। प्रो. सुरेन्द्र कुमार, विभागाध्यक्ष, एम.डी.विवि, रोहतक ने देश विदेश ने संस्कृत के सम्मान के बारे में बताया। श्री महेशचन्द्र शर्मा, पूर्व महापौर, दिल्ली नगर निगम ने 'त्रिभाषा सूत्र को सख्ती से लागू करने की बात कही। प्रो. नागेन्द्र झा, अध्यक्ष, शिक्षा विभाग, संस्कृत विद्यापीठ, दिल्ली ने संस्कृत के साथ हो रहे अन्याय को तत्काल ठीक करने की मांग की। समारोह में संस्कृत शिक्षक संघ के पदाधिकारी श्री डी. के झा, डॉ. विश्वम्भर दयालु और डॉ. ब्रजेश गौतम, श्री राजेश कुमार, डॉ. लीना सिन्हा, श्री तुलसी राम मीणा और डॉ. अतुल कुमार उपस्थित थे।

–डॉ. विश्वम्भर दयालु, महासचिव

प्रतिष्ठा में,

आर्य पुत्री पाठशाला गाँधी नगर की छात्रा को प्रथम पुरस्कार

समाज को स्वच्छ एवं समृद्ध बनाने के लिए 'दैनिक जागरण' हिन्दी दैनिक ने स्वच्छता-अभियान' समारोह का नगर निगम मुख्यालय के सभागार में एक वृहद् आयोजन किया। जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताओं का (कविता-पाठ वाद विवाद, नृत्य-गायन) क्रियान्वयन हुआ तथा आर. डब्ल्यू.ए. और स्वयं सेवी संस्थाओं को भी सम्मिलित और सम्मानित किया गया। जिसमें आर्य पुत्री पाठशाला गांधी नगर की छात्रा फरीन गौरी कक्षा – 5 को कविता पाठ के लिए प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। आर्य विद्यालयों के लिए यह गौरव की बात है। इस अवसर पर नगर निगम और जिला प्रशासन के उच्चाधिकारी और शिक्षक उपस्थित रहे।

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टैलीफेक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह